नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

जल प्रबंधन पर मुंबई में राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयकों की कार्यशाला एवं बैठक

जल प्रबंधन के लिए जल साक्षरता बढ़ाने की आवश्यकता – राजेंद्र सिंह

वर्धा दि. 6 नवंबर 2015: मेगेसेसे पुरस्कार प्राप्त जल-विशेषज्ञ राजेंद्र सिंह ने कहा कि धरती में पानी की कम होती जा रही मात्रा को समय से पूर्व रोकने और जल स्तर बढ़ाने के लिए जल साक्षरता के माध्यम से जल प्रबंधन करने की निहायत ज़रूरत है। जल साक्षरता के तहत जल को समझना, समझाना और सहेजना तथा पानी के लूटेरों से पानी को बचाना आदि कार्य करने होंगे। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है।

मुंबई में हाल ही में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं मुंबई विश्वविद्यालय की ओर से जल प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें महाराष्ट्र के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाईयों के समस्त समन्वयक एवं कार्यक्रम अधिकारी शामिल हुए थे। कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में राजेंद्र सिंह

और विशेष अतिथि के रूप में राष्ट्रीय सेवा योजना के राज्य संपर्क अधिकारी डॉ. अतुल सालुंखे तथा वरिष्ठ पत्रकार दमन दीप सिंह उपस्थित थे। विश्वविद्यालय विद्यार्थी भवन के शाहीर अमर शेख सभागार में संपन्न कार्यशाला में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की ओर से राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी एवं कार्यक्रम अधिकारी बी. एस. मिरगे शामिल हुए।

राजेंद्र सिंह ने महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त अकाल की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि पानी की कमी की वजह से राज्य में अकाल की भयावह स्थिति उत्पन्न हुई है और इससे निपटने के लिए बरसात के पानी को रोकने के उपायों पर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि ज़रूरतों के हिसाब से पानी रोकने के फार्मूले बदलने होंगे ताकि जलवायु परिवर्तन से धरती को मुक्त किया जा सके। उन्होंने कहा कि जन संरचनाओं पर अतिक्रमण, प्रदूषण तथा भूजल शोषण आदि जल प्रबंधन के लिए चुनौतियों के कारण बने हुए हैं। जल-साक्षरता, जलयुक्त शिवार, छोटे-छोटे बांध तथा जोहाड़ बनाकर हमें इन चुनौतियों का मुकाबला करना है। उन्होंने राजस्थान में अनेक नदियों को जीवित करने के लिए किए गए प्रयासों को पावर प्वाइंट प्रेज़ेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया। तत्पश्चात राज्यभर से आए रासेयो समन्वयकों एवं कार्यक्रम अधिकारियों की कार्यशाला सम्पन्न हुई जिसमें रासेयो के राज्य संपर्क अधिकारी डॉ. अतुल सालुंखे ने रासेयो द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रम एवं उपक्रमों की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन सतीश कोहरे ने किया आभार डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने माना।